विश्व न्याय मन्दिर
बहाई विश्व केन्द्र
रिज़वान 2000

विश्व के बहाइयों को

परमप्रिय मित्रों,

अपने हृदयों में अपार आनन्द की अनुभूति लिए कृतज्ञता के साथ हम अतिथेय के स्वामी के प्रति नतमस्तक होते हैं, जब हम देखतें हैं कि वैभव के इस त्योहार के साथ समाप्त हो चुकी विश्वव्यापी योजना के चार वर्षों ने कितना अद्भुत परिवर्तन ला दिया है। इस अवधि में ऐसी उल्लेखनीय प्रगति हुई कि हमारा विश्वव्यापी समुदाय उन नई ऊँचाइयों पर पहुंच गया जहां के इसके भविष्य की शानदार सफलताओं के नए उज्ज्वल क्षितिज को साफ-साफ देखा जा सकता है।

महत्वपूर्ण गुणात्मक परिवर्तन

परिमाण की दृष्टि से यह जो अन्तर उपस्थित हुआ है वह मुख्यतः उससे भी अधिक महत्वपूर्ण गुणात्मक परिवर्तन का प्रतिफल है। बहाई समुदाय की पूरी संस्कृति में ही बदलाव का अनुभव किया गया। यह परिवर्तन योजना के तीनों घटक प्रतिभागियों -- व्यक्ति, संस्था और स्थानीय समुदाय -- की विस्तृत क्षमता, उनके कार्य करने के व्यवस्थित ढांचे और फलस्वरूप उनके ज्यादा गहन आत्मविश्वास में देखा जा सकता है । ऐसा इसलिए है क्योंकि मित्रों ने पहले से ज्यादा सुसंगत ढंग से दिव्य शिक्षाओं के अपने ज्ञान के दृढ़ीकरण पर ध्यान दिया और पहले से ज्यादा सुव्यवस्थित ढंग से यह सीखा कि इन शिक्षाओं को प्रभुधर्म के प्रसार के लिए, अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों को व्यवस्थित रूप देने के लिए तथा अपने पास-पड़ोस के लोगों के साथ मिल-जुलकर कार्य करने के लिए कैसे प्रयोग में लाया जाए। एक शब्द में कहा जाए तो उन्होंने सीखने की एक ऐसी विधि अपनाई जिससे उद्देश्यपूर्ण क्रियाकलपों का जन्म हुआ। इस परिवर्तन के पीछे मुख्य भूमिका थी प्रशिक्षण संस्थानों की प्रणाली की जो बड़ी तेजी से पूरे विश्व में स्थापित किए गए। विस्तार और सुगठन के क्षेत्र में यह उपलब्धि इतनी महत्वपूर्ण रही है कि इसे अपने आप में चार वर्षीय योजना की सबसे बड़ी विरासत माना जा सकता है ।

प्रशिक्षण संस्थान समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया के एक इंजिन के रूप में

प्रभुधर्म का सन्देश देने में मित्रों की विकसित हुई क्षमता में, जिसकी झलक हमें व्यक्तिगत पहल से मिलती है, उनके प्रयासों को मार्गदर्शित करने में, आध्यात्मिक सभाओं, परिषदों और समितियों की बेहतर कार्यकुशलता में स्थानीय समुदायों के सामुदायिक व्यवहार को प्रभावित करने वाले आचार-विचार के नए तौरतरीकों के परिचय में -- इन सब में प्रशिक्षण संस्थानों की प्रणाली ने समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया के एक इंजिन के रूप में अपने अपरिहार्यता के दर्शन कराए। अनेक संस्थानों ने स्थानीय अध्ययन मंडलों के माध्यम से अपने क्रिया-क्षेत्र को बढ़ाते हुए ज्यादा व्यापक दायरे में अपने कार्यक्रम संचालित करने की क्षमता का विकास किया। उदाहरण के लिए, मंगोलिया में 106 अध्ययन मंडल स्थापित किए गए और परिणामस्वरूप वहां नए बहाइयों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस प्रकार के जो अनेक विकास हुए उनके साथ ही साथ हमारे विश्वव्यापी समुदाय के सदस्यों ने प्रार्थना की शक्ति से संबलित होने, पवित्र शब्द पर मनन करने तथा भक्तिपरक बैठकों में शामिल होने से प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक लाभ को हासिल करने की ओर भी पहले से ज्यादा ध्यान दिया। गहन व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूपान्तरण के इन्हीं तत्वों के कारण आज बहाई समुदाय का आकार बढ़ रहा है। हालांकि हाल के वर्षों की तुलना में नए बहाइयों की संख्या में बढ़ोत्तरी का अनुपात बहुत ज्यादा नहीं है परन्तु यह अत्यंत संतोष की बात है कि अब भौगालिक रूप से विस्तार हुआ है, पहले से अधिक संख्या में विभिन्न तबकों के लोग प्रभधर्म में शामिल हुए हैं और इन तमाम नए अनुयायियों की प्रभुधर्म के जीवन में सफलतापूर्वक शामिल किया गया है।

सदा सजग अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र

प्रभुधर्म की ऐसी सुखद, ऐसी संभावनाओं से भरी अवस्था के पीछे सलाहकारों की संख्या के परामर्शमूलक प्रभाव, उनकी सहभागितापूर्ण भूमिका और उनके व्यावहारिक कार्यों का अपरिमित योगदान रहा है। संस्थानों की स्थापना और उनके संचालन में उनकी इस भूमिका को और भी अधिक विस्तार प्राप्त हुआ -- एक ऐसा विस्तार जिसने सतत् सजग और स्पंदनशील अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र की समय पर दी जाने वाली प्रेरणा प्रदर्शित की ।

चार वर्षीय योजना की मुख्य विषयवस्तु

चार वर्षीय योजना के मुख्य विषय -- समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया के विकास -- ने विचार और कार्य में पहले से भी अधिक उच्च स्तर के एकीकरण की भावना को जन्म दिया । इसने बहाई समुदाय के क्रमिक विकास की उस महत्वपूर्ण अवस्था पर ध्यान केन्द्रित किया जिसे रचनात्मक युग में अवश्य ही प्राप्त किया जाना है। कारण यह है कि जब तक समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया को और व्यापक दायरे में अनवरत रूप से नहीं चलाया जाएगा तबतक, जैसाकि शोगी एफेन्दी के लेखों में परिकल्पित है,

बड़े-बड़े समूहों में लोगों के बहाई बनने के लिए अनुकूल स्थितियों का सृजन भी नहीं होगा, योजना की विषयवस्तु के फोकस में सभी प्रकार के बहाई क्रियाकलापों का अभिप्राय निहित था। इसमें स्पष्ट समझदारी के विकास का आह्वान निहित था ताकि व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के लिए परमावश्यक सुव्यवस्थित और प्रभावी योजना बनाना संभव हो सके। समुदाय के सदस्यों को क्रमश: यह महसूस हुआ कि किस तरह सुव्यवस्थित क्रियाकलापों के माध्यम से विकास और प्रगति की प्रक्रियाओं के लिए रास्ता तैयार होगा। इस जागरूकता का पैदा होना एक बहुत बड़ा कदम था जिससे शिक्षण के क्रियाकलापों के स्तर में सुधार लाना और समुदाय की संस्कृति में बदलाव लाना संभव हुआ।

दो महत्वपूर्ण कदम

इस विषयवस्तु के समन्वयकारी पहलुओं के दर्शन हमें योजना बनाने, संस्थात्मक क्षमता के निर्माण करने और मानव संसाधन के विकास करने के प्रयासों में हुए। इन सबको पिरोने वाले सूत्रों को हम योजना के आदि से अन्त तक अनुभूत कर सकते हैं। इसकी शुरूआत दिसम्बर 1995 में पवित्र भूमि में सम्पन्न सलाहकार मंडलों के अधिवेशन से हुई। बाद में उन्होंने राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं से राष्ट्रीय योजना से सम्बन्धित बैठकों में परामर्श किए जिसकी परिणति सहायक मंडल सदस्यों की सहभागिता के साथ क्षेत्रीय स्तर पर एवं स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं और समितियों की योजनाओं के रूप में हुई। इस प्रकार सभी स्तरों पर बहाई प्रशासन के तत्वों का सवावेश योजना बनाने की प्रक्रिया में हुआ और उससे भी कहीं आगे बढ़कर योजनाओं को क्रियान्वित करने की अवस्था में हुआ जहां समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की चुनौती का सामना करने के लिए संस्थात्मक क्षमता का विकास करना जरूरी था। इस सन्दर्भ में दो महत्वपूर्ण कदम उठाए गए : पहला था प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना और दूसरा क्षेत्रीय बहाई परिषदों का व्यापक स्तर पर औपचारिक गठन । स्थानीय और राष्ट्रीय स्तरों के बीच विशिष्ट रूप से इन परिषदों की स्थापना उन उन खास समुदायों की प्रशासनिक क्षमता को मजबूत बनाने के लिए की गई जहां राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाएं विकास के जटिलतर मुद्दो से जूझ रही थी और इस प्रकार जहां इस तरह का प्रशासनिक विकास आवश्यक था। इस प्रक्रिया के अनिवार्य तत्वों को एक सूत्र में पिरोने के लिये सामाजिक-आर्थिक विकास के कार्यक्रमों के लिए जो कदम सुनिश्चित किए गए उनका भी कम महत्व नहीं है क्योंकि वह सुगठन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसी तरह बाहरी क्रियाकलापों के क्षेत्र में जो नीतियां अपनाई गई वे भी समान रूप से महत्वपूर्ण थी क्योंकि प्रभुधर्म जो कि अब धुंधलके से बाहर आ रहा है, इन्हीं क्रियाकलापों के माध्यम से सामंजस्य स्थापित कर सकता है। इन सबके मिले-जुले प्रभाव से बड़े जोरदार परिणाम उत्पन्न हुए। यदि उन सबकी गिनती की जाए तो ये पन्ने कम पड़ जाएंगे। फिर भी हम उन खास बिन्दुओं का उलेख करना चाहेंगे जो चार वर्षीय योजना की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हैं ।

चार वर्षीय योजना की उपलब्धियों के कुछ प्रमुख बिन्दु

पवित्र भूमि में, आर्क के छज्जों और भवनों के निर्माण की प्रगति इस आश्वासन के साथ जारी रही कि इस ग्रेगोरियन वर्ष के अंत तक की जो समय-सीमा घोषित की गई थी उसके अन्दर ही यह काम पूरा हो जाएगा। इसके अलावे, पिछले रिज़वान सन्देश में हमें तीर्थयात्रियों के ज्यादा बड़े ग्रुपों के सन्दर्भ में हाइफा के जिस भवन का उल्लेख किया था वह इस रिज़वान से उपयोग के लिए तैयार है। इसी सन्दर्भ में, तीर्थयात्रियों तथा अन्य बहाई और गैर-बहाई यात्रियों को ठहराने के लिए बहजी में लम्बे समय से जिन भवन-निर्माण योजनाओं का विचार किया जा रहा था, उन्हें स्वीकृति मिल गई है। बहाउल्लाह के लेखों के जिस नए खंड की प्रतीक्षा की जा रही थी उसके पाठों का अनुवाद पूरा हो चुका है और उसके प्रकाशन की तैयार की जा रही है।

विस्तार और सुगठन के क्षेत्रों की प्रगति

ऊपर जिन तौर-तरीकों का उल्लेख किया गया है उनके अलावे भी विस्तार और सुगठन के क्षेत्रों की प्रगति की झलक और कई रूपों में मिलती है। जैसे, पायनीयरिंग के क्षेत्र में, प्रभुधर्म के सन्देश के प्रसार में, साहित्य के प्रकाशन में, कलाओं के उपयोग में और बहाई अध्ययन संघों की प्रगति में। लगभग 3300 अनुयायी अल्पकालिक और दीर्घकालिक अंतर्राष्ट्रीय पायनीयरों के रूप में स्थापित हुए। बहुत से ऐसे देशों ने जिन्हें पहले स्वयं ही पायनीयरों की आवश्यकता थी, अन्य देशों में अपने यहां से पायनीयर भेजे। यह एक और संकेत था राष्ट्रीय समुदायों की प्रौढ़ता का। कनाडा और संयुक्त राष्ट्र के समुदाय प्राप्त दिशानिर्देश के अनुरूप ही पायनीयरों तथा उससे भी ज्यादा संख्या में भ्रमणशील शिक्षकों को अपने देश से बाहर भेजने में उत्कृष्ट स्थान पर रहे और इनमें युवाओं का अच्छा-खासा प्रतिनिधित्व था। बहाई शिक्षकों के अफ्रीका जाकर रहने के आहवान के उत्तर में अमेरिका में रहने वाले अफ्रीकी मूल के अनुयायियों का उत्साह खास तौर पर उल्लेखनीय रहा ।

प्रसार

प्रभुधर्म का सन्देश देने के क्षेत्र में अनेक क्रियाकलापों को शामिल किया गया जिसके अन्तर्गत वार्षिकोत्सवों के आयोजन, समारोह, वाद-विवाद के ग्रुपों, प्रदर्शनों और इसी तरह के विस्तृत विसरों का प्रायोजन शामिल है। इनके माध्यम से भारी संख्या में लोगों को प्रभुधर्म की शिक्षाओं का परिचय देना संभव हो सका। सतत बढ़ती हुई संख्या में अपने द्वार पर दस्तक देने वाले आगन्तुकों के लिए बहाई उपासना मंदिर चुम्बकीय केन्द्र सिद्ध हुए, खास तौर पर भारत में जहां पिछले साल लगभग पचास लाख लोग मन्दिर आए। इन क्रियाकलापों के अलावे बहाई सन्देश के प्रसार के लिए मीडिया का अनगिनत उपयोग किया गया। संयुक्त राष्ट्र में राष्ट्रीय शिक्षण समिति द्वारा परिकल्पित एक मीडिया अभियान के सिलसिले में कोई 60,000 लोगों ने अपनी

जिज्ञासा का परिचय दिया। पूरे विश्व में, प्रभुधर्म के बारे में जानकारी देने का कार्य पहले से भी ज्यादा गति से समाचार पत्रों में ऐसे सहानुभूतिपरक लेखों के जरिए हुआ जो अनायास प्रकाशित हुए। इसी तरह रेडिया और टेलीविजन स्टेशनों ने भी नियमित बहाई कार्यक्रमों के प्रसार के जरिए प्रभुधर्म को लोगों के समझ लाने की तत्परता दिखलाई। कौंगो गणतंत्र और लाइबीरिया जैसे देशों में ऐसा खास तौर पर हुआ। ऐसे सौभाग्यपूर्ण विकास का सबसे सम्मानजनक पक्ष था स्वतंत्र रूप से अंतर्राष्ट्रीय मीडिया संस्थापनों द्वारा वर्ष 2000 के आगमन पर विश्वव्यापी मीडिया कार्यक्रमों के तहत पवित्र भूमि की आंशिक झलक के टेलीविजन प्रसारण के लिए दिव्यात्मा बाब की समाधि और छज्जों का चयन करना।

कला का प्रयोग

प्रभुधर्म के सन्देश के प्रसार, शिक्षण तथा पूरे विश्व में समुदायों के दृढ़िकरण और उनके भक्तिपरक क्रियाकलापों में कला का प्रयोग एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में उभरकर सामने आया। विभिन्न कलाओं ने युवा वर्ग को आकर्षित किया और उन्होंने विश्व के कई हिस्सों में इन कलाओं का उपयोग मुख्यतः अनगिनत नृत्य एवं नाट्य कार्यशालाओं के जरिए सन्देश देने और दृढ़ीकरण के अपने क्रियाकलापों में किया। कलाओं की गतिमयता ने महज नृत्य-संगीत का माहौल नहीं बनाया वरन् उससे भी आगे जाकर व्यापक कल्पनापरक क्रियाकलापों के माध्यम से लोगों को प्रभुधर्म में सुदृढ़ किया। जहां भी लोककला का प्रयोग किया गया, खास तौर पर अफ्रीका में, वहां शिक्षण का कार्य तेज हुआ। उदाहरण के लिए, घाना और लाइबीरिया दोनों ने ही शिक्षण कार्य में कला के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एक ''लाइट ऑफ युनिटी'' प्रायोजन चलाया और भारत में ''कम्युनल हार्मोनी ग्रुप'' इसी उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ा।

बहाई साहित्य

प्रायः सलाहकारों की प्रेरणा से और महाद्वीपीय कोष की सहायता से, खास तौर पर अफ्रीका और एशिया में, बहाई साहित्य के अनुवाद और प्रकाशन का कार्य तेज किया गया। इसके अलावे, किताब-ए-अक़दस अपने सम्पूर्ण अरबी संस्करण में और अन्य भाषाओं में सामने आया ।

स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं का गठन

हालॉकि 1997 से प्रभावी इस व्यवस्था के कारण कि स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं का गठन रिज़वान के प्रथम दिन ही हो, इन संस्थाओं की संख्या में कमी आई, जैसाकि अन्दाज़ किया गया था, परन्तु संख्या की यह गिरावट बहुत सोचनीय नहीं थी। तबसे संख्या में एक स्थिरता रही है और सुगठन की प्रक्रिया जारी है ।विश्व न्याय मंदिर के आठ नए स्तम्भ तैयार हुए और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की कुल संख्या बढ़कर 181 हो गई।

विद्‌वतापरक क्रियाकलाप

इन चार वर्षों में बहाई धर्म के विद्‌वतापरक क्रियाकलापों में जो तेजी आई है और जिनके माध्यम से प्रभुधर्म के बौद्‌धिक आधार को मजबूत करने की अनिवार्य आवश्यकता पूरी हुई है वह खास तौर पर संतुष्टदायक है । इससे जो दो अमूल्य परिणाम मिले हैं उनमें से पहला है बहाई साहित्य का प्रभावशाली रूप से समृद्‌ध होना और दूसरा बहाई सिद्‌धान्तों के आलोक में अनेक समसामयिक समस्याओं की परख करते हुए व्याख्यानों की एक पूरी श्रृंखला का सामने आना। बहाई अध्ययन संघों के नेटवर्क ने, इस साल जिन्होंने अपनी स्थापना का रजत वर्ष मनाया, योजना अवधि में पांच नई संस्थाओं को अपने क्रियाकलापों से सम्बद्‌ध किया। सेवा का यह विशिष्ट क्षेत्र जिस विविधता और रचनात्मकता को आमंत्रित कर रहा है उसकी झलक हमें मिली पापुआ न्यू गिनिया के प्रथम बहाई अध्ययन कॉन्फ्रेंस में और फिर पारम्परिक जापानी स्कॉलरशिप के आध्यात्मिक उद्‌गम पर ध्यान केन्द्रित कराते हुए जापान के अध्ययन संघ की पहलकदमी में।

सामाजिक-आर्थिक विकास

सामाजिक-आर्थिक विकास के क्षेत्र में जो निर्णायक प्रगति हुई वह गुणात्मक थी हालॉकि प्रायोजनों की संख्यात्मक वृद्‌धि भी शानदार रही। चार वर्षीय योजना के प्रारंभ में वर्षभर में 1350 गतिविधियां सम्पन्न होने की रिपोर्ट मिली थी जबकि योजना के अन्त में उनकी संख्या बढ़कर 1800 से भी ज्यादा हो गई। इस विधि में, क्रियाकलापों की मुख्य विशेषता रही ज्यादा सुव्यवस्थित तौर-तरीकों को अपनाने की भावना। सामाजिक-आर्थिक विकास के सिद्‌धान्तों पर परामर्श तथा सक्रियता बढ़ाने के लिए बहाई विश्व केन्द्र स्थित सामाजिक-आर्थिक विकास प्रभाग ने 13 क्षेत्रीय सेमिनारों का प्रायोजन किया जिनमें 60 देशों के करीब 700 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। साथ ही इसने युवाओं को सक्षम बनाने और साक्षरता, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण, महिलाओं की प्रगति तथा नैतिक शिक्षण से सम्बन्धित सुनियोजित अभियानों के लिए पायलेट प्रोजेक्ट तैयार करने तथा अनुकूल विषय-सामग्री की तय्यारी जैसी बातों पर भी समुचित ध्यान दिया। इसका एक उदाहरण था गुयाना में संचालित किया गया एक खास कार्यक्रम जिसमें 1500 से ज्यादा साक्षरताकर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया। दूसरा उदाहरण यह था कि मलेशिया में महिलाओं की प्रगति के लिए प्रशिक्षण के आठ मापदंड तैयार किए गए और ये ही मापदंड अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के प्रशिक्षण सत्रों के लिए आधारभूत विषय-सामग्री थे। बहाई रेडियो स्टेशनों को प्रशिक्षण संस्थानों के क्रियाकलापों में शामिल करने की पहल की गई पनामा के गुआमी क्षेत्र में। चूंकि संस्थान सामाजिक-आर्थिक विकास के क्षेत्र में भी प्रशिक्षण देने की क्षमता से सम्पन्न हैं अतः दर्जनों संस्थान इस दिशा में सक्रिय हुए हैं और वे वर्तमान में साक्षरता, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण, व्यावसायिक प्रशिक्षण सहित अनेक क्षेत्रों में ऐसे प्रयासों के

अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। बहाई-प्रायोजित या बहाई प्रेरित अनेक एजेन्सियों ने विभिन्न प्रायोजनों में अपनी शक्ति लगाई है जैसेकि कैमरून में "रिवर ब्लाइंडनेस" नामक एक प्रकार के अंधेपन पर विजय पाने के लिए विश्व स्वास्थ्य संघ के सहयोग से संचालित किया गया एक बहाई प्रायोजन जिसके जरिए 30000 से भी अधिक व्यक्तियों को आवश्यक दवाएं मुहैया कराई गई हैं। दूसरा उदाहरण है इथोपिया में संस्थापित "युनिटी कॉलेज" नामक एक गैर-सरकारी विश्वविद्यालय जिसके छात्रों की संख्या बढ़कर 8000 हो गई है। एक अन्य है स्विट्जरलैंड की लैंडेग एकेडमी। एक और अपने अकादमिक कार्यक्रम का विस्तार और सुगठन करते हुए दूसरी ओर इसने बालकान में सामाजिक संघर्ष की भयावह परिस्थितियों के निराकरण के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों में अत्यंत ही प्रशंसनीय सहायता प्रदान की है। ऐसा ही एक अन्य संस्थान है बोलीविया का नूर विश्वविद्यालय जिसने एक्वाडोर के साथ मिलकर एक प्रायोजन के जरिए 1000 से अधिक स्कूली शिक्षकों को अपने नैतिक नेतृत्व कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया। सामाजिक-आर्थिक विकास के इस क्षेत्र में, क्षमता-निर्माण के ऐसे कार्यों से चार वर्षीय योजना के उद्देश्यों को काफी लाभ मिला।

प्रभुधर्म के बाहरी क्रियाकलाप

1994 में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को बाहरी क्रियाकलापों के सन्दर्भ में जो कार्य-योजना दी गई थी, उससे मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए कूटनयिक एवं जन-सम्पर्क के क्षेत्रों में समुदायों की क्षमता आश्चर्यजनक रूप से विकसित हुई और संयुक्त राष्ट्र, गैर-सरकारी संगठनों तथा मीडिया के साथ बहाई समुदाय का एक गत्यात्मक सम्बन्ध कायम हुआ। कार्य-योजना में अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तरों पर दो प्रमुख लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित किया गया था : विश्व शांति की प्रक्रियाओं पर प्रभाव डालने पर तथा प्रभुधर्म की संरक्षा पर। ईरान के अपने प्रिय सहधर्मियों की रक्षा के लिए अपनाए गए उपायों के माध्यम से बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने और भी सम्मान और समर्थन हासिल किया जिससे कार्य-योजना के अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी अवसर उत्पन्न हुए। ईरान की जटिल चुनौती का मुकाबला करने के लिए हमारी संस्थाओं और बाहरी क्रियाकलापों से जुड़ी एजेन्सियों ने सरकारों तथा संयुक्त राष्ट्र के स्तर पर उपलब्ध माध्यमों को सक्रिया करने के लिए नए तरीके अख़्तियार किए। ईरान में उत्पीड़न के मामले ने विश्व की बड़ी से बड़ी हस्तियों का ध्यान आकर्षित किया। वस्तुतः, ईरान की एक कचहरी द्वारा दो बहाइयों की मौत की सजा की पुष्टि किए जाने और एक तीसरे को भी ऐसी ही सजा दिए जाने के समाचार पाकर अमेरिकी राष्ट्रपति ने बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया जाहिर की और ईरान को स्पष्ट चेतावनी दी। विश्व के अग्रणी नेताओं और संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेपों के परिणामस्वरूप ईरानी बहाइयों की हत्या वाकई थम-सी गई और लम्बे समय के लिए जेल में डाले जाने की सजा पाने वालों की संख्या काफी कम हो गई।

इन हस्तक्षेपों का स्वागत करते हुए हम ऐसे प्रयासों की क्षमता के साथ कारगर बनाने में जुटे ईरान के अपने भाई-बहनों के आत्म-बलिदान की भावना, उनकी दृढ़ता और उनकी अदम्य निश्ठा की सराहना करते हैं। उनके अन्तर्मन से झलकती से खूबियां उनके देशवासियों को भी चकित करके रख देती हैं कि आखिर कौन सी शक्ति है जो उन्हें उनके ऊपर किए गए घृणित, क्रूर आक्रमणों को झेलने की ताकत देती है। इस बात की व्याख्या और भला कैसे की जाए कि इतने लम्बे समय से इतने अधिक लोगों को बस मुट्ठी भर लोगों का समर्थन मिला है ? जब तक उनमें से एक भी मौत की धमकी का सामना कर रहा हो तबतक वे अपनी ओर विश्व का ध्यान और भला कैसे खींच सकते थे? ईरान की व्यथा यह है कि अभी तक आक्रामकों को यह अनुभूति नहीं हुई है कि उत्पीड़न के शिकार इन लोगों ने जिन दिव्य सिद्धान्तों की खातिर अपना सर्वस्व, यहॉ तक कि अपना जीवन, त्याग दिया है उन्हीं सिद्धान्तों के गर्भ में वे समाधान भी छिपे हुए हैं जिनसे असंतोष की इस घड़ी में वहां के लोगों को वह सबकुछ प्राप्त हो सकेगा जिनके लिए वे ललक रहे हैं। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ईरान के हमारे मित्रों को जिस सुनियोजित षडयंत्र का क्रूरतापूर्वक शिकार बनाया जा रहा है आखिर उसी के माध्यम से सर्वशक्तिमान सत्ता के रहस्यमय परिणाम प्रकट होंगे जो उन्हें प्रतिज्ञापित गरिमा के उस भाग्योदय की ओर ले जाएंगे जिसका आश्वासन उन्हें प्राप्त है।

जहां तक बाहरी मामलों से सम्बन्धित इन्य प्रकार की कार्य-योजनाओं का सम्बन्ध है, वे चार विषय-वस्तुओं से निर्देशित थे -- मानवाधिकार, महिलाओं की स्थिति में सुधार, विश्व-स्तर पर समृद्धि और नैतिक विकास। हमारे रिकॉर्ड दर्शाते हैं कि मानवाधिकार और महिलाओं की स्थिति में सुधार के दायरे में काफी प्रगति हुई। जहां तक मानवाधिकार का सवाल है, संयुक्त राष्ट्र स्थित बहाई प्रभाग ने मानवाधिकार के विषय में शिक्षा देने सम्बन्धी एक रचनात्मक कार्यक्रम संचालित किया जिसके माध्यम से राजनयिक कार्यों के लिए क्षमता के निर्माण की दिशा में अब तक कम से कम 99 राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाएं लाभान्वित हुई हैं। महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रसंग में, अभी तक इससे सम्बन्धित 52 राष्ट्रीय प्रभागों की स्थापना, सभी स्तरों पर अधिवेशनों और कार्यशालाओं में असंख्य बहाई स्त्री-पुरूषों की सहभागिता, संयुक्त राष्ट्र महिला विकास कोष से सम्बन्धित और गैर-सरकारी संगठन सहित अन्य अनेक प्रमुख गैर-सरकारी समितियों में बहाई प्रतिनिधियों का निर्णायक पदों पर चयन -- ये सब कुल मिलाकर यह झलकाते हैं कि बहाउल्लाह के अनुयायी स्त्री-पुरूष की समानता सम्बन्धी उनके सिद्धान्त को आगे बढ़ाने के लिए कितना श्रमसाध्य प्रयास कर रहे हैं।

साथ ही साथ विविध प्रकार के लोगों को बहाई धर्म के बारे में सूचना देने के कार्य में एक के बाद एक पहल की जा रही है। ऐसे कार्यों के अंतर्गत हैं:- ''दि बहाईवर्ल्ड वेबसाइट'' प्रारंभ किया जाना जोकि प्रतिमाह औसतन 25000 लोगों को आकर्षित करता रहा है, ''हू इज राइटिंग द

फ्यूचर?'' नामक वक्तव्य का प्रकाशन जिससे हर जगह के मित्रों को समकालीन मुद्दों पर बातचीत करने में सहायता मिल रही है, वर्ल्डवाइड वेब पर फारसी भाषा में ''पयाम-ए-दोस्त'' नामक रेडियो कार्यक्रम का वाशिंगटन डी.सी. के महानगरीय क्षेत्र में प्रति सप्ताह एक घंटे का प्रसारण जो इन्टरनेट के जरिए पूरे विश्व में हर समय सुना जा सकता है, तथा दिन-प्रति-दिन की समस्याओं के आइने में नैतिक सिद्धान्तों की व्यावहारिकता पर आधारित उच्चस्तरीय और मौलिक टेलीविजन कार्यक्रम का समारंभ जिसकी अल्बानिया, बोस्निया-हर्जगोबिना, बुल्गारिया, क्रोएशिया, हंगरी, रोमानिया, स्वावेनिया और पूर्ववर्ती मकदूनिया के युगोस्लाव गणतंत्र में सरकारी उच्चाधिकारियों ने जोरदार प्रशंसा की है।

जैसे-जैसे यह सदी अपने समापन की ओर बढ़ रही है वैस-वैसे एक और भी बात प्रबलता के साथ उभर कर सामने आई और वो यह कि दुनियाभर के लोग तथाकथित ''लोक समाज संगठन'' जैसे मंचों के माध्यम से अपनी अभिलाशाओं को अभिव्यक्त करने के लिए सचेत हुए। सभी जगह के बहाइयों के लिए यह अवश्य ही अत्यंत संतोष का विषय होगा कि मानवजाति का व्यापक प्रतिनिधित्व करने वाले एक गैर-सरकारी संगठन के रूप में अंतर्राष्ट्रीय बहाई समुदाय ने मनुष्य की नियति को आकार देने वाली वृहत्तर चर्चाओं में एकताकारी एजेन्ट के रूप में सबका विश्वास प्राप्त किया है। संयुक्त राष्ट्र में हमारे मुख्य प्रतिनिधि को आर्थिक और सामाजिक परिषद द्वारा स्थापित किए गए और-सरकारी संगठनों की समिति का सह-अध्यक्ष नियुक्त किया गया। यह एक ऐसा पद है जिसके कारण बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को मिलेनियम फोरम के संगठन में प्रमुख भूमिका अदा करने का अवसर मिला है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान द्वारा आहूत और मई में आयोजित होने वाली इस बैठक में लोक समाज संगठनों को विश्वव्यापी मुद्दों पर अभिमत और अनुशंसा तक करने का मौका मिलेगा और इन अनुशंसाओं को इसी साल सितम्बर में आयोजित शासनाध्यक्षों के सहस्राब्दी सम्मेलन में प्रस्तुत किया जाएगा।

संसार में घटित होने वाले परिवर्तनों के आध्यात्मिक आयाम के प्रति मानवजाति के जागरूक होने का बहाइयों के लिए एक खास महत्व है। अन्तर्धार्मिक सम्वादों में तेजी आई है। चार वर्षीय योजना के दौरान इस सम्वाद-प्रक्रिया में बहाई धर्म एक मान्यता प्राप्त प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित हुआ। विगत दिसम्बर में केप टाउन में सम्पन्न विश्व धर्म संसद में लगभग 6000 प्रतिभागी शामिल हुए जिसमें एक सशक्त बहाई प्रतिनिधिमंडल भी था। बहाइयों ने इस घटनाक्रम को आयोजित करने वाले अफ्रीकी और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही निदेशक मंडलों में रहकर कार्य किया। इस घटना में बहाइयों के रूचि लेने के पीछे यह तथ्य था कि पश्चिम की किसी जनसभा में बहाउल्लाह के के नाम का प्रथम उल्लेख 1893 में शिकागो में आयोजित संसद में किया गया था।

जोर्डान में विगत नवम्बर महीने में सम्पन्न हुई दो अन्तर्धार्मिक घटनाओं में बहाइयों ने आमंत्रित प्रतिभागियों के बतौर भाग लिया। इनमें पहली घटना थी धर्म और वैमनस्य विषय पर मध्य-पूर्व में आयोजित अधिवेशन और दूसरी थी धर्म और शांति के विश्व अधिवेशन की वार्षिक सभा। बहाई प्रतिनिधियों ने रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा प्रायोजित वेटिकन सिटी और नई दिल्ली की घटनाओं में भाग लिया। सलाहकार जीना सोराबजी नई दिल्ली में पोप जॉन पॉल द्वितीय की उपस्थिति में सभा को सम्बोधित करने वाले धर्म-प्रतिनिधियों में से एक थीं। ब्रिटेन में वेस्टमिंस्टर पैलेस की रॉयल गैलरीमें नए मिलेनियम के अवसर पर आयोजित एक अंतर्धार्मिक समारोह में बहाई प्रतिनिधियों ने आठ अन्य प्रमुख धर्मों के सदस्यों के साथ शिरकत की और लोगों को प्रभुधर्म के बारे में बतलाया। उस अवसर पर वहां के राजसत्ता प्रमुख, प्रधानमंत्री, कैंटरबरी के आर्कबिशप तथा अन्य विशिष्ट लोगों के बीच ''ब्रिटेन के नौ प्रमुख धर्मों'' के सम्मेलन का उल्लेख हुआ। जर्मनी में पहली बार बहाइयों को एक अंतर्धार्मिक सम्वाद में शामिल किया गया। इस घटना के कारण ईसाई लोगों में लम्बे समय से पल रही भ्रांति का निराकरण हुआ जो कि एक संविदा-भंजक द्वारा लिखित तथा 1981 में लूथर विचारधारा से प्रभावित एक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक के प्रभाव में आकर बहाइयों से परहेज करते आ रहे थे। जर्मनी के बहाई समुदाय की अपने आप में एक और सफलता को निरूपित करने वाली उपलब्धि थी तीन बहाइयों द्वारा लिखित और 1995 में एक प्रमुख गैर-बहाई फर्म द्वारा प्रकाशित 600 पन्नों का एक विद्वतापूर्ण ग्रंथ जिसमें उन्होंने संविदा-भंजकों की दलील का खंडन प्रस्तुत किया। अंतर्धार्मिक सम्वाद के क्रम में एक नया मोड़ आया 1998 में जबकि लैम्बेथ पैलेस में विश्व बैंक के प्रतिनिधियों और नौ प्रमुख धर्मों के सदस्यों के बीच एक बैठक हुई और जिसकी परिणति विश्व धर्म विकास सम्वाद के गठन के रूप में हुई। इस ''सम्वाद'' का घोषित लक्ष्य है धार्मिक समुदायों और विश्व बैंक के बीच एक सूत्र स्थापित करना ताकि दुनिया की गरीबी दूर करने के लिए वे साथ मिलकर प्रभावी ढंग से काम कर सकें। अंतर्धार्मिक सम्वादों में जो तीव्रता और व्यापकता आई है उससे धर्मों के बीच सम्बन्धों में एक नया परिदृश्य उपस्थित हुआ है। साफ झलकने लगा है कि विभिन्न धार्मिक समुदाय मैत्री और बन्धुता की चेतना से ओत-प्रेत होने की चेष्टा में हैं -- वह चेतना जिसे बहाउल्लाह ने अपने अनुयायियों को अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति झलकाने की प्रेरणा दी थी।

युगल प्रक्रिया

इन चार वर्षों में बहाई समुदाय ने सघन प्रयास ऐसे समय में किए जब व्यापक मानव समाज परस्पर-विरोधी स्वार्थों की चपेट में पड़ा रहा। इस छोटे परन्तु अत्यंत गतिशील कालखंड में बहाई समुदाय तथा समस्त विश्व में क्रियाशील शक्तियों ने बड़ी निर्मम तेजी से अपना कार्य किया। इस प्रवाह में पहले से भी कहीं अधिक स्पष्टता के साथ वह सामाजिक परिदृष्य उभरकर सामने आया जिसकी ओर शोगी एफेन्दी ने संकेत किया था। साठ साल से भी पहले उन्होंने ''एक दूसरे

पर सतत और सापेक्ष प्रभाव डालने वाली उत्थान और पतन, संघटन और विघटन, सुव्यवस्था और अराजकता की समानान्तर प्रक्रियाओं'' की ओर ध्यान दिलाया था । ये युगल प्रक्रियाएं बहाई समुदाय की अपनी विशिष्ट प्रक्रियाओं से अलग-थलग नहीं चल रही थीं बल्कि समय-समय पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभुधर्म को भी अपनी इसी गतिमयता में आमंत्रित कर रही थीं, जैसाकि देखा गया है। ऐसा लग रहा था मानों वे समय के एक ही गलियारे के दूसरे छोर पर अपनी उपस्थिति अंकित कर रही थीं। एक ओर तो कम से कम 40 स्थान ऐसे थे जहां धार्मिक, राजनीतिक, प्रजातीय या कबीलाई संघर्ष की तपिश पाकर युद्ध भड़क रहे थे, अनेक देशों का जनजीवन अकस्मात पूर्णरूपेण विखंडित होकर ठहर-सा गया था, राजनीतिक हथियार के रूप में आतंकवाद संक्रामक रूप से फेल चुका था, अपराधियों के अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क के प्रसार से संकट मंडरा रहा था। वहीं दूसरी ओर, सामूहिक सुरक्षा की प्रणालियों को लागू करने और उन्हें पूर्णता प्रदान करने के प्रयास तहे-दिल से किए जा रहे थे जोकि शांति-स्थापना के लिए बहाउल्लाह के एक निर्देशविशेष की याद दिला देता है। अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय की स्थापना का आह्वान किया जा रहा था जोकि बहाई अपेक्षाओं पर आधारित एक और कदम है। विश्वव्यापी समस्याओं से निबटने के लिए समुचित प्रणाली की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए विश्व के नेता सहस्राब्दी शिखर सम्मेलन की तैयारी कर रहे हैं, नई-नई संचार प्रणालियां यह मार्ग प्रशस्त कर रही हैं कि धरती पर रहने वाला कोई भी व्यक्ति किसी से भी संवाद स्थापित कर सके। एशिया में आर्थिक विखंडन के कारण विश्व अर्थव्यवस्था पर अस्थिरता का खतरा मंडराने लगा परन्तु साथ ही इससे ऐसे प्रयासों के लिए भी प्रेरणा मिली जिनसे तात्कालिक स्थिति को संभला जा सके और साथ ही अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और अर्थव्यवस्था में समानता की भावना लाने के उपाय ढूंढ़े जा सकें। वर्तमान समय में परस्पर-विरोधी किन्तु एक-दूसरे को प्रभावित करती हुई प्रवृत्तियों के ये बहुत थोड़े से उदाहरण हैं। जैसाकि शोगी एफेन्दी ने कहा है ये वे सक्रिय शक्तियां हैं जो अन्ततः ईश्वर की विराट योजना में मिल जाने की प्रेरणा से सम्पन्न हैं -- उस विरोट योजना में ''जिसके चरम लक्ष्य हैं मानवजाति की एकता और मनुष्यमात्र के लिए शांति''।

चार घटनापूर्ण वर्ष

इन चार घटनापूर्ण वर्षों के समापन के समय हम ग्रिगोरियन काल और बहाई युग, दोनों ही दृष्टियों से अंत और प्रारंभ के एक मिलन-बिन्दु पर आ पहुंचे हैं। एक और यह मिलन-बिन्दु बीसवीं सदी के सिमटने में निहित है और दूसरी ओर रचनात्मक युग के एक नए चरण की शुरूआत में। समय के इन दो सांचों से झॉकता हुआ परिदृश्य हमें प्रेरित करता है कि हम विश्व को रूपाकार देने वाले सामंजस्यपूर्ण रूझानों के विचार-दर्शन पर मनन करें और ऐसा करते हुए हम उस अंतर्दृष्टि का ध्यान रखें जिसे शोगी एफेन्दी ने आर्क के प्रारंभ होते समय बड़े चित्रात्मक रूप से उभारा था। चार वर्षीय योजना की अवधि में कार्मेल पवर्तत प्रायोजन की प्रगति के साथ-साथ यह विचार-दर्शन

और भी स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया जब हमने देखा कि विश्व-स्तर पर राजनीतिक शांति-संरचना का रूपाकार तय करने के लिए दुनिया के नेताओं ने साहसिक कदम उठाए और स्थानीय तथा राष्ट्रीय बहाई संस्थाएं अपने क्रमिक विकास के नए चरण में पहुंचीं। हमारे साथ है बीसवीं सदी की पावन चिरस्थायी स्मृति जो न केवल हमारी शक्ति को संबलित करती है बल्कि हमारा मार्ग भी तय करती है।

यह स्मृति है मानवजाति के इतिहास के उस महत्वपूर्ण क्षण की जब बहाउल्लाह की संविदा के केन्द्र ने अपने अप्रतिम धर्मनेतृत्व-काल में नई विश्व व्यवस्था के षिल्प की रचना की थी और जब बाद के कुछ घोर संकटापन्न काल में धर्म संरक्षक ने एक ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था की संरचना तैयार करने के लिए घनघोर परिश्रम किया था जो आज इस सदी के अंत में संसार को आश्चर्यचकित करते हुए अपने मूल स्वरूप की सम्पूर्णता में तैयार खड़ी है। इस तरह आज हम दो काल-खंडों को जोड़ने वाले एक पुल पर खड़े हैं। बहाउल्लाह के मुट्ठीभर प्रेमोन्मत्त अनुयायियों के संघर्श और बलिदान से भरी एक पूरी शताब्दी के दौरान जिन क्षमतओं का विकास संभव हुआ है, यह जरूरी है कि उन क्षमताओं का उपयोग रचनात्मक काल में शेष बचे हुए अपरिहार्य लक्ष्यों के लिए किया जाए। यह वह रचनात्मक काल है जिसके अथक परिश्रम के अनेक काल-चक्र हमें प्रभुधर्म के उस सुनहले युग की ओर ले जाएंगे जब यह धरती परम महान शांति से अच्छादित होगी।

बारह महीनों की योजना

इस रिज़वान का प्रारंभ हम एक बारह महीनों की योजना से करते हैं। हालांकि यह काल-खंड छोटा-सा है परन्तु कतिपय अत्यावश्यक लक्ष्यों के लिए और प्रिय मास्टर की दिव्य योजना के अगले बीस वर्षों को आगे बढ़ाने की दृष्टि से यह पर्याप्त होगा। आज से चार साल पहले जो कार्य बड़े ध्यान से प्रारंभ किया गया था -- ज्ञान, योग्यता और सेवा की कुशलता को सुनियोजित ढंग से प्राप्त करना -- उसे और तेज किया जाना चाहिए। जहां कहीं भी राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान अस्तित्व में हैं, उन्होंने जिन कार्यक्रमों को अपनाया है, जिन पद्धतियों का श्रीगणेश किया है, उन्हें और भी पूर्ण रूप दें। जहां कहीं भी आवश्यकता का अनुभव किया गया है वहां नए संस्थानों की स्थापना की जाए। व्यक्तिगत पहल के माध्यम से या फिर संस्थाओं द्वारा प्रयोजित होकर शिक्षण के जो क्रियाकलाप शुरू किए गए हैं उन्हें सुव्यवस्थित बनाने के लिए और भी बेहतर उपाय किए जाएं। कुछ अंश तक इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हरेक महादेश में कई जगहों पर सलाहकारों और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं ने “क्षेत्रीय विकास कार्यक्रमों” की स्थापना की है। इसके परिणामस्वरूप भविष्य की योजनाओं के लिए फायदेमंद अनुभव प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत बहाइयों, संस्थाओं तथा स्थानीय समुदाय से आग्रह है कि वे इन अत्यावश्यक लक्ष्यों

पर ध्यान केन्द्रित करें, ताकि रिज़वान 2001 से प्रारंभ होने वाली पांच वर्षीय योजना के लिए वे पूरी तरह तैयार हो सकें -- एक ऐसी योजना के लिए जो बहाई विश्व को समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया के विकास के अगले चरण में ले जाएगी।

एक बड़ी चुनौती

परन्तु इन कार्यों पर ध्यान देने से भी परे एक बड़ी चुनौती है जिसका सामना करना है। जरूरत इस बात की है कि हमारे बच्चे आध्यात्मिक पोषण प्राप्त कर सकें और प्रभुधर्म के जीवन में शामिल किए जाएं। उन्हें एक ऐसी दुनिया के प्रवाह में बहने के लिए नहीं छोड़ देना चाहिए जो नैतिक खतरों से लबालब भरा है। समाज की वर्तमान दशा में बच्चे एक क्रूर नियति के शिकार हैं। देश-देश में लाखों बच्चे ऐसे हैं जिनका समाज में कहीं कोई स्थान ही नहीं है। बच्चे -- चाहे वे अमीर हों या गरीब -- अपने आप को माता-पिता तथा अन्य व्यस्क सदस्यों से एक अलगाव की स्थिति में पाते हैं। इस अलगाव की जड़ है स्वार्थ में जोकि उस भौतिकवाद का नतीजा है जो हर जगह के लोगों के हृदय को जकड़े हुई नास्तिकता का मूल कारण है। बच्चों की सामाजिक स्थानशून्यता हमारे इस वर्तमान समय में पतन की ओर जाते हुए समाज का पक्का संकेत है। यह दशा किसी एक जाति, किसी एक वर्ग, किसी एक राष्ट्र या किसी खास आर्थिक स्थिति एक सीमित नहीं है बल्कि सबकी है। यह महसूस करके हमारा हृदय व्यथित हो जाता है कि दुनिया के कितने सारे हिस्सों में बच्चे सैनिक के रूप में भर्ती किए जाते हैं, मजदूरों के रूप में उनका शोषण किया जाता है, यथार्थतः उन्हें गुलामों के रूप में बेचा जाता है, उनसे वेश्यावृत्ति कराई जाती है, उन्हें अश्लील साहित्य का केन्द्र-बिन्दु बनाया जाता है, अपनी ही कामनाओं में डूबे माता-पिता द्वारा जिन्हें परित्यक्त कर दिया जाता है। कहां तक उल्लेख करें, उन्हें और भी कई-कई चीजों का शिकार बनाया जाता है जिनकी गिनती नहीं की जा सकती। ऐसे कई भयावह जुल्म स्वयं माता-पिता अपने बच्चों पर ढाते हैं। इन सबसे कितनी आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक क्षति पहुंचती है इसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। हमारा विश्वव्यापी समुदाय इन दुर्दशाओं के परिणामों से ऑखें नहीं मूंद सकता। इस अनुभूति से हमें बच्चों और भविष्य के हित में प्राथमिकता के साथ और सतत रूप से प्रयास करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए।

बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा

हालांकि बच्चों के क्रियाकलापों की पिछली योजनाओं में भी स्थान दिया गया था परन्तु उनपर जितना आवश्यक था उतना ध्यान नहीं दिया गया। बच्चों और किशोरों की आध्यात्मिक शिक्षा बहाई समुदाय के अगले विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। अतः जरूरी है कि इस कमी को दूर किया जाए। संस्थानों को सुनिश्चित करना चाहिए कि अपने कार्यक्रमों में वे बच्चों की नैतिक कक्षाओं के शिक्षकों को प्रशिक्षित करें जो अपनी सेवाएं अपने स्थानीय समुदायों को उपलब्ध

कराएंगे। हालाँकि बच्चों को आध्यात्मिक और अकादमिक शिक्षा देना अपरिहार्य है तथापि यह उनके चरित्र के विकास और व्यक्तित्व को निखारने के लिए किए जानेवाले प्रयासों का ही एक छोटा-सा अंश है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि सभी स्तरों पर व्यक्ति और संस्थाएं अर्थात कुल मिलाकर पूरा समुदाय बच्चों के प्रति सही रवैया प्रदर्शित करे और उनके कल्याण में आम तौर पर रूचि ले। ऐसा रवैया तेजी से पतन की ओर जा रही व्यवस्था से परे, काफी परे, होना चाहिए।

बच्चे किसी भी समुदाय के सबसे कीमती खजाने होते हैं। उनमें भविष्य के समाज का बीज निहित होता है -- उस समाज का जिसकी रूप-रचना बहुत हद तक इस बात पर निर्भर होता है कि उसके वयस्क सदस्य बच्चों के सन्दर्भ में क्या कुछ करते हैं या क्या करने से चूक जाते हैं। बच्चे वे न्यास हैं जिनकी अनदेखी करने की छूट किसी समुदाय को नहीं हैं। बच्चों के लिए सबको समेट लेने वाला प्यार, उनसे बात-व्यवहार करने का तरीका, उनकी फिक्र करने का अंदाज़, वयस्कों का उनके प्रति आचरण -- ये सब उस वांछित रवैयों में शामिल हैं। प्यार अनुशासन मांगता है, बच्चों को कठिनाईयां झेल पाने योग्य बनाने का साहस मांगता है न कि उन्हें व्यर्थ खयालों में डुबाए रखना और न ही उन्हें अपने ही उपायों पर छोड़ देना। एक वातावरण बनाने की जरूरत होती है जिसमें बच्चों को लगे कि वे समुदाय के अंग हैं और समुदाय का उद्देष्य उनका भी उद्देश्य है। उन्हें प्यार से मगर आग्रहपूर्वक मार्गदर्शित करना होगा कि वे अपना जीवन बहाई आदर्शों के अनुरूप बनाएं तथा अपनी परिस्थितियों के अनुकूल अध्ययन और प्रभुधर्म के शिक्षण में शक्ति लगाएं।

किशोर

समुदाय में रहने वाले नवयुवा वे किशोर हैं जो 12 से 15 वर्ष के हैं। वे एक खास ग्रुप का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनकी अपनी खास जरूरतें हैं क्योंकि वे अमूमन बचपन और यौवन के बीच की दहलीज पर होते हैं जबकि उनके भीतर कई परिवर्तन कुलबुलाते हैं। उन्हें ऐसी सक्रिय गतिविधियों में संलग्न करने पर रचनात्मक ध्यान दिया जाना जरूरी है जिनमें उनकी अभिरूचि को स्थान मिल सके, शिक्षण और सेवा के लिए उनकी क्षमताएं निर्मित हो सकें, और अपने से बड़ी उम्र के युवाओं के साथ सामाजिक अभिक्रिया का अवसर प्राप्त हो। ऐसे क्रियाकलापों में कला की विभिन्न विधाओं का प्रयोग बहुत मूल्यवान हो सकता है।

माता-पिता

और अब हम कुछ बातें माता-पिता से कहना चाहते हैं जो अपने बच्चों के लालन-पालन के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं। हम उनसे अपील करते हैं कि वे अपने बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा पर सतत ध्यान दें। कुछ माता-पिता, लगता है, यही सोचते हैं कि यह जिम्मेवारी पूरी तरह

से समुदाय का है, कुछ दूसरों के ख्याल में बच्चों को सत्य की खोज करने की स्वतंत्रता देने के लिए उन्हें प्रभुधर्म की शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। और फिर कुछ ऐसे माता-पिता भी हैं जो यह जिम्मेवारी लेने में स्वयं को अपर्याप्त समझते हैं। परन्तु इनमें से कोई भी दृष्टिकोण सही नहीं है। प्रिय मास्टर ने कहा है कि "माता-पिता पर यह कर्तव्य के तौर पर लागू है कि वे अपने पुत्र-पुत्री को प्रशिक्षित करने के लिए शक्तिभर प्रयास करें"। आगे उन्होंने कहा हैः "यदि वे इस बात की उपेक्षा करेंगे तो वे जवाबदेह होंगे और कठोर स्वामी की उपस्थिति में भर्त्सना के योग्य माने जाएंगे"। माता-पिता की शिक्षा का स्तर चाहे जो भी हो, वे अपने बच्चों के आध्यात्मिक विकास को रूपायित करने में अहम स्थान रखते हैं। बच्चों का नैतिक चरित्र ढालने की अपनी क्षमता को उन्हें कभी भी कम करके नहीं आंकना चाहिए। चूंकि अपने घर के वातावरण के माध्यम से वे ऐसा प्रभाव डालने की अपनी क्षमता को उन्हें कभी भी कम करके नहीं आंकना चाहिए। चूंकि अपने घर के वातावरण के माध्यम से वे ऐसा प्रभाव डालने की क्षमता रखते हैं जो उनका अनिवार्य पक्ष है और इस वातावरण का निर्माण वे पूरी चेतना से ईश्वर के प्रति अपने प्रेम, उसके नियमों के प्रति अपनी सचेष्ट निष्ठा, कट्टरता से दूर रहेने की भावना तथा पीठ पीछे बुराई करने की आदत के विनाशकारी प्रभाव से मुक्त रहकर करे हैं। प्रत्येक माता अथवा पिता जो आशीर्वादित सौन्दर्य का अनुयायी है उसका कर्तव्य है कि वह इस प्रकार के आचरण करे कि बच्चे सहज प्रेरणा के उनके प्रति आज्ञापालन का गुण प्रदर्शित करें -- एक ऐसा गुण जिसे बहाई शिक्षाओं में अत्यंत ही महत्वपूर्ण माना गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि घर पर किए जा रहे प्रयासों के अलावे माता-पिता को अपने समुदाय में संचालित बहाई बच्चों की कक्षाओं की भी मदद करनी चाहिए। हमेशा यह भी ध्यान रहे कि बच्चे एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो उन्हें कुटिल सच्चाइयों की खबर सुनाती हैं - या तो ऊपर वर्णित उन भयावह अनुभवों के माध्यम से जो उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से भोगे हैं या फिर मास मीडिया के प्रसार के कारण जिससे बचा नहीं जा सकता। इस कारण कई बच्चे अवयस्क उम्र में ही वयस्क बन जाने को बाध्य हो जाते हैं और इसी श्रेणी में हैं वे बच्चे जिन्हें उन आदर्शों, उस अनुशासन की खोज है जिससे उन्हें जीवन में मार्गदर्शन मिल सके। एक पतनशील समाज की ऐसी अंधकारमय पृष्ठभूमि में बहाई बच्चों को चाहिए कि वे एक बेहतर भविष्य के संकेत बनकर चमकें।

जनवरी 2001 में सम्मेलन

इस विचार से हमारी आषाएं स्पन्दित हैं कि जनवरी 2001 में महाद्वीपीय सलाहकार पवित्र भूमि में इकट्ठे होंगे -- एक ऐसे अवसर पर जबकि अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र ईश्वर के पवर्तत पर अपने स्थायी भवन में आसीन होगा। निस्सन्देह, रचनात्मक युग की ऐतिहासिक घटनाओं में से एक सिद्ध होने वाले इस आयोजन में सलाहकारों के साथ पूरी दुनिया से आए सहायक मंडल सदस्य भी शामिल होंगे। बहाई धर्म के इन अधिकारियों के तारामंडल का यह सम्मिलन अपनी

खास प्रकृति के कारण बहाई समुदाय के हित में अवश्य ही अकथित लाभकारी प्रभावों को जन्म देगा - उस बहाई समुदाय के हित में जो पुनः एक योजना के परिसमापन और दूसरी नई योजना के समारंभ की दहलीज पर खड़ा होगा। इन प्रभावों पर मनन करते हुए कृतज्ञता के साथ हम अपने हृदय-पटल को परमप्रिय धर्मभुजा अली अकबर फुरूतन और अली मुहम्मद वर्गा की ओर अभिमुख करते हैं जो पवित्र भूमि में निवास करते हुए उस मशाल को ऊंचा उठाए चल रहे हैं जिसे प्रिय धर्मसंरक्षक ने उनके हृदय में प्रज्जवलित किया था।

अमातुल-बहा रूहिया खानुम

इस बारह माह की योजना के साथ हम एक ऐसे पुल से गुजर रहे हैं जहां हम फिर लौटकर कभी नहीं आएंगे। इस योजना का समारंभ हम अमातुल-बहा रूहिया खानुम की पार्थिव अनुपस्थिति में कर रहे हैं। वह बीसवीं शताब्दी के वस्तुतः समापन-काल तक हमारे साथ रहीं -- प्रकाश की एक किरण की तरह जिसने मानवजाति के इतिहास के उस अतुलनीय काल-खंड में अपनी चमक बिखेरी थी। दिव्य योजना की पातियों में प्रिय मास्टर ने ईश्वरीय आह्वान के प्रसार के लिए समस्त विश्व में भ्रमण न कर पाने की अपनी असमर्थता पर विलाप किया था और अपनी गहन निराशा में उन्होंने लिखा थाः- "भगवान करें तुम ऐसा कर सको"। अमातुल-बहा ने इसके प्रत्युत्तर में अपनी असीम ऊर्जा का परिचय दिया और धरती पर सुदूर तक फेले 185 देशों का भ्रमण करते हुए उन्होंने उनके निवासियों को अपने अद्धितीय उपहार प्राप्त करने का सौभाग्य दिया। उनके व्यक्तित्व की आभा कभी क्षेण नहीं होगी। धरती के हजारो-हजार लोगों के हृदयों को आज भी उनसे प्रकाश मिलता है। और किसी भी प्रकार से उन्हें अपनी समुचित श्रद्धांजलि देने मे असमर्थ हम लोगों को क्या यह नहीं चाहिए कि इस योजना की अवधि में अपने विनम्र प्रयासों को हम उनके प्रति समर्पित करें जिनके लिए प्रभुधर्म का सन्देश देना ही मुख्य ध्येय था, जीवन का सम्पूर्ण आनन्द था ?

हस्ताक्षरित
विश्व न्याय मंदिर